

उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं विशेष बच्चों की तार्किक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन

धर्मेन्द्र वंश¹, डा0 मनवीर सिंह²

¹शोधार्थी, एन0एम0एस0एन0 दास, (पी0जी0) कालेज, बदायूँ, उ0प्र0, सम्बद्ध : महात्मा ज्योतिबाफुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली।

²प्रोफेसर, एन0एम0एस0एन0 दास, (पी0जी0) कालेज, बदायूँ, उ0प्र0, सम्बद्ध : महात्मा ज्योतिबाफुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली।

Email: dharmendravansh1972@gmail.com



Received 01 September 2026

Accepted 05 September 2026

Published 08 September 2026

Corresponding Author:

धर्मेन्द्र वंश

Email: dharmendravansh1972@gmail.com

DOI: <https://doi.org/10.64880/pcjaict.v1i5.03>

Funding: This research received no specifics grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sector.

Copyright: © 2026 The Author(s).



This is an open access article under the [Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/).

OPEN ACCESS

सारांश:

शिक्षा बालक के सर्वांगीण विकास का महत्वपूर्ण माध्यम है और वर्तमान समय में केवल पाठ्य-पुस्तकीय ज्ञान के स्थान पर तर्क, विश्लेषण, समस्या-समाधान, निर्णय लेने तथा निष्कर्ष निकालने जैसी उच्च स्तरीय मानसिक क्षमताओं के विकास पर विशेष बल दिया जा रहा है। उच्च प्राथमिक स्तर बाल्यावस्था से किशोरावस्था की ओर संक्रमण की महत्वपूर्ण अवस्था है, जिसमें विद्यार्थियों की बौद्धिक, सामाजिक, संवेगात्मक तथा मानसिक क्षमताओं का तीव्र विकास होता है। तार्किक योग्यता विद्यार्थी को तथ्यों एवं सूचनाओं के बीच संबंध स्थापित करने, समानता-असमानता पहचानने, क्रम निर्धारित करने, कारण-परिणाम समझने तथा उचित निष्कर्ष तक पहुँचने में सहायता करती है। समावेशी शिक्षा के वर्तमान संदर्भ में सामान्य एवं विशेष बच्चों को समान शैक्षिक अवसर उपलब्ध कराना आवश्यक है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की सीखने की क्षमता को केवल उनकी शारीरिक, संवेदी, बौद्धिक अथवा अन्य कठिनाइयों के आधार पर निर्धारित नहीं किया जा सकता, क्योंकि उचित शिक्षण विधि, सहयोगी वातावरण, अनुकूलित सामग्री तथा आवश्यक सहायता मिलने पर उनमें भी तार्किक चिंतन का प्रभावी विकास संभव है। इसी दृष्टि से प्रस्तुत अध्ययन में सामान्य एवं विशेष विद्यार्थियों की तार्किक योग्यता की तुलना की गई। अध्ययन में कुल 500 विद्यार्थियों को सम्मिलित करने की योजना रखी गई, जिनमें 250 सामान्य तथा 250 विशेष विद्यार्थी हैं। तार्किक योग्यता के मापन हेतु के. बायति द्वारा निर्मित तार्किक योग्यता परीक्षण का प्रयोग किया गया तथा प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन और क्रान्तिक अनुपात के आधार पर किया गया। निष्कर्ष रूप में पाया कि उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं विशेष छात्रों की तार्किक योग्यता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया, उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं विशेष छात्रों की तार्किक योग्यता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

मुख्यशब्द - उच्च प्राथमिक स्तर, सामान्य विद्यार्थी, विशेष विद्यार्थी, तार्किक योग्यता

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का एक महत्वपूर्ण साधन है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति केवल पढ़ना-लिखना ही नहीं सीखता बल्कि उसमें सोचने, समझने, तर्क करने, निर्णय लेने, समस्या का समाधान करने तथा बदलती परिस्थितियों के साथ स्वयं को समायोजित करने की क्षमता भी विकसित होती है। वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य प्रत्येक बालक की व्यक्तिगत क्षमताओं, रुचियों, आवश्यकताओं और संभावनाओं के अनुरूप उसके

व्यक्तित्व का विकास करना है। इसी कारण आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में समावेशी शिक्षा को विशेष महत्व दिया जा रहा है। समावेशी शिक्षा का मूल उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सामान्य तथा विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले सभी बच्चे समान शैक्षिक अवसर प्राप्त करें और अपनी क्षमता के अनुसार विकास कर सकें। उच्च प्राथमिक शिक्षा बालक के विकास की एक अत्यंत महत्वपूर्ण अवस्था है। सामान्यतः इस स्तर पर कक्षा टप् से टप्प् तक के विद्यार्थी अध्ययन करते हैं। यह अवस्था बाल्यावस्था से किशोरावस्था की ओर संक्रमण की अवस्था होती है। इस समय बालकों में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक तथा बौद्धिक विकास तीव्र गति से होता है। बालक अपने आसपास की घटनाओं को केवल प्रत्यक्ष रूप में समझने के स्थान पर उनके कारणों, परिणामों और संबंधों को समझने का प्रयास करने लगता है। वह विभिन्न समस्याओं पर विचार करता है, उनमें समानता एवं असमानता को पहचानता है तथा उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष निकालने की क्षमता विकसित करता है। इसलिए उच्च प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों की तार्किक योग्यता का विकास उनकी शैक्षिक उपलब्धि और भावी जीवन दोनों के लिए महत्वपूर्ण है। तार्किक योग्यता से आशय व्यक्ति की उस मानसिक क्षमता से है जिसके द्वारा वह किसी समस्या, परिस्थिति या सूचना को क्रमबद्ध ढंग से समझकर तथ्यों के बीच संबंध स्थापित करता है और उचित निष्कर्ष तक पहुँचता है। तार्किक योग्यता में वर्गीकरण, समानता एवं असमानता की पहचान, क्रम निर्धारण, संबंध स्थापित करना, कारण-परिणाम को समझना, अनुमान लगाना, समस्या समाधान तथा निष्कर्ष निकालना जैसी क्षमताएँ सम्मिलित होती हैं। एक विद्यार्थी यदि किसी प्रश्न का उत्तर केवल याद की गई जानकारी के आधार पर देता है, तो यह उसकी स्मृति क्षमता को प्रदर्शित करता है। लेकिन यदि वह उपलब्ध तथ्यों का विश्लेषण करके सही निष्कर्ष तक पहुँचता है, तो यह उसकी तार्किक योग्यता को प्रदर्शित करता है। आज की शिक्षा व्यवस्था में तार्किक योग्यता को विशेष महत्व इसलिए भी दिया जा रहा है क्योंकि आधुनिक समाज ज्ञान, सूचना, विज्ञान और तकनीकी परिवर्तन पर आधारित है। विद्यार्थियों को प्रतिदिन अनेक प्रकार की समस्याओं और परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। ऐसे में केवल पाठ्य-पुस्तकों का ज्ञान पर्याप्त नहीं है। विद्यार्थियों में यह क्षमता होना आवश्यक है कि वे उपलब्ध जानकारी का परीक्षण कर सकें, सही और गलत में अंतर कर सकें, समस्या के विभिन्न पक्षों पर विचार कर सकें तथा उचित निर्णय ले सकें। गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, भाषा तथा दैनिक जीवन की अनेक गतिविधियों में तार्किक योग्यता का प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष उपयोग होता है। बालक की तार्किक योग्यता उसके पारिवारिक वातावरण, विद्यालयी वातावरण, शिक्षण विधियों, सामाजिक परिस्थितियों, व्यक्तिगत रुचियों तथा बौद्धिक विकास सहित अनेक कारकों से प्रभावित हो सकती है। प्रत्येक बालक की सीखने की गति और क्षमता समान नहीं होती। कुछ विद्यार्थी सामान्य गति से सीखते हैं, जबकि कुछ विद्यार्थियों को सीखने के लिए अतिरिक्त सहायता, विशेष शिक्षण विधियों अथवा अनुकूलित शैक्षिक सामग्री की आवश्यकता होती है। इसी संदर्भ में विशेष बच्चों की शिक्षा का प्रश्न महत्वपूर्ण हो जाता है। विशेष बच्चे वे बच्चे हैं जिनकी शैक्षिक आवश्यकताएँ उनकी किसी विशेष स्थिति या क्षमता के कारण सामान्य बच्चों से भिन्न हो सकती हैं। इनमें दृष्टिबाधित, श्रवणबाधित, शारीरिक दिव्यांगता वाले, बौद्धिक एवं विकासात्मक कठिनाइयों वाले तथा अन्य विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले विद्यार्थी सम्मिलित हो सकते हैं। यह समझना आवश्यक है कि किसी बच्चे की शारीरिक या अन्य विशेष आवश्यकता उसके सीखने की संभावनाओं को पूरी तरह निर्धारित नहीं करती। उचित वातावरण, उपयुक्त शिक्षण विधि, आवश्यक सहायक उपकरण, शिक्षक का सहयोग और परिवार का प्रोत्साहन मिलने पर विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी भी विभिन्न क्षेत्रों में प्रभावी प्रदर्शन कर सकते हैं। समावेशी शिक्षा की अवधारणा ने सामान्य और विशेष बच्चों को एक साथ सीखने का अवसर प्रदान किया है। एक ही विद्यालय और कक्षा में विभिन्न क्षमताओं वाले बच्चों का अध्ययन करना न केवल सामाजिक समावेशन की दृष्टि से उपयोगी है, बल्कि इससे शिक्षकों को विद्यार्थियों की विविध क्षमताओं को समझने का अवसर भी मिलता है। इसके साथ ही यह प्रश्न भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि सामान्य और विशेष बच्चों की तार्किक योग्यता में किस प्रकार का अंतर पाया जाता है। क्या विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की तार्किक योग्यता सामान्य बच्चों की तुलना में कम होती है, अथवा उचित शैक्षिक अवसर मिलने पर दोनों समूहों के बीच अंतर कम हो सकता है? इन प्रश्नों का वैज्ञानिक अध्ययन आवश्यक है। तार्किक योग्यता का संबंध केवल किसी एक विषय से नहीं है। गणित में प्रश्नों को हल करने, विज्ञान में परिकल्पना बनाने तथा निष्कर्ष निकालने, सामाजिक विज्ञान में घटनाओं के कारणों को समझने और भाषा में तर्कपूर्ण विचार व्यक्त करने के लिए तार्किक क्षमता आवश्यक है। इसी प्रकार दैनिक जीवन

में किसी सूचना की विश्वसनीयता पर विचार करना, विकल्पों में से उचित विकल्प चुनना तथा किसी समस्या का समाधान करना भी तार्किक योग्यता से संबंधित है। अतः विद्यालयी शिक्षा में तार्किक योग्यता का विकास विद्यार्थियों के समग्र बौद्धिक विकास का महत्वपूर्ण हिस्सा है। विशेष बच्चों के संदर्भ में तार्किक योग्यता का अध्ययन और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। यदि शिक्षक को यह जानकारी हो कि विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों की तार्किक क्षमताएँ किन क्षेत्रों में अपेक्षाकृत मजबूत हैं और किन क्षेत्रों में उन्हें अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता है, तो शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, यदि किसी विद्यार्थी को मौखिक निर्देशों को समझने में कठिनाई होती है, तो दृश्य सामग्री, चित्र, संकेत, गतिविधि आधारित शिक्षण या तकनीकी साधनों का उपयोग किया जा सकता है। इसी प्रकार यदि किसी विद्यार्थी को अमूर्त अवधारणाओं को समझने में कठिनाई होती है, तो ठोस वस्तुओं और दैनिक जीवन के उदाहरणों के माध्यम से तार्किक अवधारणाओं को समझाया जा सकता है। वर्तमान शिक्षा में बाल-केंद्रित तथा गतिविधि-आधारित शिक्षण पर बल दिया जा रहा है। विद्यार्थियों को केवल जानकारी प्रदान करने के स्थान पर उन्हें प्रश्न पूछने, खोज करने, चर्चा करने, प्रयोग करने और समस्याओं का समाधान करने के अवसर दिए जाने चाहिए। ऐसी गतिविधियाँ तार्किक चिंतन को विकसित करने में सहायक होती हैं। विशेष बच्चों के लिए इन गतिविधियों को उनकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार अनुकूलित किया जा सकता है। इसलिए सामान्य और विशेष बच्चों के बीच तार्किक योग्यता के तुलनात्मक अध्ययन से शिक्षण की प्रभावी रणनीतियों के विकास में सहायता मिल सकती है। अतः उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं विशेष बच्चों की तार्किक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन वर्तमान शैक्षिक संदर्भ में एक महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक विषय है। यह अध्ययन विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमताओं को समझने के साथ-साथ समावेशी शिक्षा की प्रभावशीलता, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की आवश्यकताओं तथा विशेष बच्चों के लिए उपयुक्त शैक्षिक रणनीतियों के निर्धारण में सहायता कर सकता है। इसके माध्यम से यह जानने का प्रयास किया जा सकता है कि दोनों समूहों की तार्किक योग्यता में किस प्रकार की समानताएँ और भिन्नताएँ विद्यमान हैं तथा किन शैक्षिक परिस्थितियों में उनकी तार्किक क्षमताओं का बेहतर विकास किया जा सकता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

उच्च प्राथमिक स्तर सामान्यतः बालक के बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक तथा शैक्षिक विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण अवस्था होती है। इस स्तर पर बालक केवल तथ्यों और सूचनाओं को याद करने के स्थान पर उनका विश्लेषण करना, कारण एवं परिणाम को समझना, समस्याओं का समाधान करना तथा परिस्थितियों के आधार पर तार्किक निष्कर्ष निकालना सीखता है। अतः इस अवस्था में विद्यार्थियों की तार्किक योग्यता का अध्ययन उनके शैक्षिक विकास को समझने के लिए आवश्यक है। प्रत्येक बालक की सीखने की गति, रुचि, क्षमता और आवश्यकता अलग-अलग हो सकती है। विशेष बच्चों के संदर्भ में यह अंतर और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को सीखने के लिए उपयुक्त शिक्षण विधि, अतिरिक्त सहायता तथा अनुकूल वातावरण की आवश्यकता हो सकती है। इसलिए यह जानना आवश्यक है कि उनकी तार्किक योग्यता किस प्रकार विकसित होती है और सामान्य बच्चों की तुलना में उसमें किस प्रकार की समानताएँ अथवा भिन्नताएँ पाई जाती हैं। समावेशी शिक्षा को प्रभावी बनाना है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को सामान्य विद्यालयों एवं कक्षाओं में समान शैक्षिक अवसर प्रदान करने पर विशेष बल दिया जा रहा है। केवल बच्चों को एक ही कक्षा में बैठाना ही समावेशी शिक्षा का उद्देश्य नहीं है, बल्कि प्रत्येक बच्चे की क्षमता के अनुरूप सीखने के अवसर उपलब्ध कराना भी आवश्यक है। यदि सामान्य एवं विशेष बच्चों की तार्किक योग्यता के संबंध में वैज्ञानिक जानकारी उपलब्ध हो, तो शिक्षक उनके लिए अधिक प्रभावी एवं बाल-केंद्रित शिक्षण रणनीतियाँ विकसित कर सकते हैं। शिक्षण विधियों के चयन से संबंधित है। यदि अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि दोनों समूहों की तार्किक योग्यता में महत्वपूर्ण अंतर है, तो शिक्षकों को शिक्षण प्रक्रिया में आवश्यक परिवर्तन करने में सहायता मिल सकती है। उदाहरण के लिए, गतिविधि-आधारित शिक्षण, खेल, पहेलियाँ, चित्र, मॉडल, समूह कार्य, समस्या-समाधान गतिविधियाँ तथा अनुभवात्मक अधिगम जैसी विधियों का उपयोग विद्यार्थियों की तार्किक क्षमता के विकास के लिए किया जा सकता है। इस प्रकार अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षक के लिए व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं। व्यक्तिगत

भिन्नताओं की पहचान है। शिक्षा मनोविज्ञान में यह स्वीकार किया गया है कि सभी विद्यार्थी समान मानसिक क्षमताओं के साथ विद्यालय नहीं आते। किसी विद्यार्थी की स्मरण शक्ति अच्छी हो सकती है, तो किसी की समस्या-समाधान क्षमता बेहतर हो सकती है। इसी प्रकार कुछ विशेष बच्चों में किसी विशेष क्षेत्र में कठिनाई हो सकती है, जबकि दूसरे क्षेत्र में वे अपेक्षाकृत बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं। तार्किक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन इन व्यक्तिगत भिन्नताओं को समझने में सहायता करता है तथा शिक्षक को विद्यार्थियों की वास्तविक क्षमताओं के अनुरूप शैक्षिक सहायता देने का अवसर प्रदान करता है। समस्या-समाधान एवं उच्च स्तरीय चिंतन के विकास से संबंधित है। आज की शिक्षा का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों को जानकारी प्रदान करना नहीं है, बल्कि उनमें चिंतन, विश्लेषण, तर्क, निर्णय एवं समस्या-समाधान जैसी क्षमताओं का विकास करना भी है। तार्किक योग्यता इन सभी क्षमताओं का आधार है। यदि विद्यार्थी किसी समस्या के कारणों को समझकर उसके संभावित समाधान खोजने में सक्षम है, तो वह अपने शैक्षिक एवं दैनिक जीवन की अनेक परिस्थितियों का अधिक प्रभावी ढंग से सामना कर सकता है। छठी आवश्यकता शैक्षिक उपलब्धि में सुधार से संबंधित है। तार्किक योग्यता का विभिन्न विषयों के अधिगम से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संबंध हो सकता है। गणित में प्रश्नों को हल करने, विज्ञान में कारण-परिणाम समझने, सामाजिक विज्ञान में घटनाओं का विश्लेषण करने तथा भाषा में अर्थ एवं संबंधों को समझने के लिए तार्किक चिंतन की आवश्यकता होती है। अतः तार्किक योग्यता के स्तर को समझना विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति को बेहतर बनाने में उपयोगी हो सकता है। अतः कहा जा सकता है कि उच्च प्राथमिक स्तर पर सामान्य एवं विशेष बच्चों की तार्किक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन केवल दोनों समूहों के बीच अंतर ज्ञात करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समावेशी, समानतापूर्ण, बाल-केंद्रित एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के विकास की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों की वास्तविक क्षमताओं को समझने, उनकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षण प्रदान करने, समस्या-समाधान एवं उच्च स्तरीय चिंतन को विकसित करने तथा विद्यालयी शिक्षा को अधिक प्रभावी बनाने में सहायता प्राप्त हो सकती है। यही इस अध्ययन की प्रमुख आवश्यकता एवं व्यापक शैक्षिक महत्ता है।

सम्बन्धित शोध साहित्य अध्ययन

- ग्लाम्ब्स एवं नुसर (2019) ने “विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों में तार्किक योग्यता का अनुदैर्ध्य मापन” विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन में विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों की तार्किक योग्यता को सामान्य विद्यार्थियों के साथ तुलनीय रूप से मापने की संभावना का परीक्षण किया गया। अध्ययन में विशेष विद्यालयों के 324 तथा सामान्य माध्यमिक विद्यालयों के 338 विद्यार्थियों को शामिल किया गया और छह वर्ष के अंतराल पर तार्किक योग्यता का मापन किया गया। परिणामों से पता चला कि प्रयुक्त तार्किक योग्यता परीक्षण विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए भी उपयुक्त था तथा दोनों समूहों के बीच तार्किक योग्यता की वैध तुलना की जा सकती थी। शोधकर्ताओं ने यह भी पाया कि कुछ प्रश्नों में समूहों के बीच मापन संबंधी अंतर था, लेकिन ये अंतर इतने व्यवस्थित नहीं थे कि दोनों समूहों की औसत तार्किक योग्यता की तुलना को अमान्य कर दें। अतः अध्ययन का निष्कर्ष था कि उपयुक्त एवं निष्पक्ष परीक्षण के माध्यम से विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों की तार्किक योग्यता का सामान्य विद्यार्थियों के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- ग्लाम्ब्स एवं नुसर (2019) के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह भी था कि विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक क्षमताओं का आकलन करते समय केवल सामान्य विद्यार्थियों के लिए बनाए गए परीक्षणों का यांत्रिक रूप से प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। परीक्षण की भाषा, प्रश्नों की कठिनाई, निर्देशों की स्पष्टता तथा विभिन्न प्रकार की विशेष आवश्यकताओं को ध्यान में रखना आवश्यक है। शोध में प्रयुक्त तार्किक योग्यता परीक्षण में दोनों विद्यालयी समूहों के लिए पर्याप्त मापन-गुणवत्ता पाई गई और शोधकर्ताओं ने निष्कर्ष निकाला कि विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को बड़े पैमाने के शैक्षिक आकलनों में भी तार्किक क्षमता के आधार पर सम्मिलित किया जा सकता है।
- ग्लाम्ब्स एवं नुसर (2019) के निष्कर्ष आपके प्रस्तावित अध्ययन के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि आपके शोध में भी सामान्य और विशेष बच्चों की तार्किक योग्यता की तुलना की जानी है। उनके अध्ययन से यह आधार मिलता है कि विशेष बच्चों की तार्किक क्षमता को वैज्ञानिक ढंग से

मापा जा सकता है और उपयुक्त परीक्षण होने पर सामान्य तथा विशेष समूहों के बीच निष्पक्ष तुलना संभव है। हालांकि उनका नमूना मुख्यतः माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों से संबंधित था, इसलिए उच्च प्राथमिक स्तर के बच्चों पर इसी प्रकार का अध्ययन करना एक उपयोगी शोध-अवसर प्रस्तुत करता है।

- गैरोते, फेल्डर, क्रेहनमैन, श्रेपेल, सेर्मियर-डेसमोंटे एवं मोसर-ओपिट्ज (2020) ने “समावेशी कक्षाओं में सामाजिक स्वीकृतिरू समावेशन के प्रति शिक्षक के दृष्टिकोण और कक्षा-प्रबंधन की भूमिका” विषय पर अध्ययन किया। यद्यपि इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य तार्किक योग्यता का प्रत्यक्ष अध्ययन करना नहीं था, फिर भी इसके निष्कर्ष विशेष बच्चों के समावेशी कक्षा वातावरण के संदर्भ में महत्वपूर्ण हैं। अध्ययन ने इस बात पर ध्यान दिया कि शिक्षक का दृष्टिकोण और कक्षा-प्रबंधन समावेशी कक्षा में विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों की सामाजिक स्वीकृति को प्रभावित कर सकते हैं। इससे यह संकेत मिलता है कि विशेष बच्चों के संज्ञानात्मक विकास को समझते समय केवल व्यक्तिगत क्षमता ही नहीं, बल्कि विद्यालय और कक्षा का वातावरण भी ध्यान में रखा जाना चाहिए।
- श्वाब, लेहोफर एवं तांजर (2021) ने “विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों के प्रति सामाजिक व्यवहार और सहपाठियों के दृष्टिकोण का विद्यार्थियों की पारस्परिक अंतःक्रिया पर प्रभाव” विषय पर अध्ययन किया। अध्ययन का केंद्र तार्किक योग्यता नहीं था, लेकिन इसके परिणाम समावेशी शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं। शोध से यह स्पष्ट हुआ कि विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के प्रति सहपाठियों का व्यवहार और सामाजिक दृष्टिकोण उनके पारस्परिक संबंधों से जुड़ा हुआ है। इसलिए सामान्य और विशेष बच्चों की तार्किक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन करते समय दोनों समूहों को समान तथा सहयोगात्मक वातावरण प्रदान करना आवश्यक है, क्योंकि सामाजिक वातावरण भी सीखने और सहभागिता को प्रभावित कर सकता है।
- मॉरर, बेकर, हिल्केनमायर एवं डासेकिंग (2021) ने “विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं ले विद्यार्थियों के शिक्षकों के दूरस्थ अधिगम के अनुभव और आत्म-प्रभावकारिता” विषय पर अध्ययन किया। शोध का संबंध मुख्यतः दूरस्थ शिक्षा और शिक्षकों की आत्म-प्रभावकारिता से था। परिणामों ने विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को प्रभावी ढंग से शिक्षित करने में शिक्षक की तैयारी और क्षमता के महत्व को रेखांकित किया। यह अध्ययन आपके शोध के संदर्भ में इसलिए उपयोगी है क्योंकि तार्किक योग्यता जैसी संज्ञानात्मक क्षमताओं के विकास के लिए शिक्षक को बच्चों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षण रणनीतियाँ अपनानी पड़ती हैं।
- यांग, फंग सिन एवं सैविकास (2023) ने “विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों में करियर अनुकूलनशीलता के मापन की संरचना और विश्वसनीयता का अध्ययन” किया। अध्ययन प्रत्यक्ष रूप से तार्किक योग्यता पर आधारित नहीं था, फिर भी इसने विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों में मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक क्षमताओं के मापन के लिए विश्वसनीय उपकरणों की आवश्यकता को स्पष्ट किया। इससे यह विचार मजबूत होता है कि सामान्य एवं विशेष बच्चों की तुलना करने वाले शोध में उपकरण की विश्वसनीयता और वैधता की पर्याप्त जाँच आवश्यक है।
- बीमिश, हे एवं युएन (2024) ने “एशिया-प्रशांत क्षेत्र में विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों के लिए समावेशन को आगे बढ़ाना” विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन में एशिया-प्रशांत क्षेत्र में विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के समावेशन से संबंधित चुनौतियों और संभावनाओं पर विचार किया गया। अध्ययन का प्रमुख संकेत यह है कि समावेशी शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिए केवल विद्यालय में प्रवेश देना पर्याप्त नहीं है, बल्कि बच्चों की व्यक्तिगत शैक्षिक आवश्यकताओं के अनुरूप सहयोग, संसाधन और शिक्षण व्यवस्था उपलब्ध कराना आवश्यक है। यह निष्कर्ष आपके शोध में सामान्य एवं विशेष बच्चों की तार्किक योग्यता की तुलना के लिए महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।
- चेन (2024) ने “मध्य विद्यालय के शिक्षकों के कल्याण पर विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों के अनुपात का प्रभाव” विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन से संकेत मिलता है कि समावेशी कक्षाओं में विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों की संख्या और उनकी शैक्षिक आवश्यकताएँ

शिक्षकों के अनुभव तथा कार्य-परिस्थितियों से जुड़ सकती हैं। आपके प्रस्तावित अध्ययन के संदर्भ में यह महत्वपूर्ण है, क्योंकि शिक्षक की कार्य-स्थितियाँ और उपलब्ध संसाधन अप्रत्यक्ष रूप से विशेष बच्चों के लिए उपलब्ध शिक्षण अवसरों को प्रभावित कर सकते हैं।

समस्या कथन

उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं विशेष बच्चों की तार्किक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन।

चरों का परिभाषीकरण

- उच्च प्राथमिक विद्यालय:- उच्च प्राथमिक विद्यालय से आशय उस विद्यालयी स्तर से है जिसमें प्राथमिक स्तर के पश्चात् की शिक्षा प्रदान की जाती है। प्रस्तुत अध्ययन में उच्च प्राथमिक विद्यालय से आशय उन विद्यालयों से है जहाँ कक्षा टप् से टप्प् तक के विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान की जाती है।
- सामान्य बच्चे:- सामान्य बच्चों से आशय उन विद्यार्थियों से है जो सामान्य शैक्षिक एवं बौद्धिक क्षमताओं के साथ उच्च प्राथमिक विद्यालय में अध्ययनरत हैं तथा जिन्हें विद्यालयीय अभिलेखों अथवा संबंधित मानदंडों के आधार पर किसी विशेष आवश्यकता वाले बच्चे की श्रेणी में नहीं रखा गया है। प्रस्तुत अध्ययन में सामान्य बच्चे से आशय कक्षा टप्, टप्प् एवं टप्प् में अध्ययनरत उन विद्यार्थियों से है जो सामान्य विद्यालयी परिस्थितियों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और अध्ययन के लिए निर्धारित चयन मानदंडों को पूरा करते हैं।
- विशेष बच्चे:- विशेष बच्चों से आशय ऐसे विद्यार्थियों से है जिन्हें उनकी शैक्षिक आवश्यकताओं, शारीरिक, संवेदी, बौद्धिक अथवा अन्य विशिष्ट क्षमताओं के कारण सामान्य बच्चों की अपेक्षा विशेष शैक्षिक सहायता एवं अनुकूलन की आवश्यकता हो सकती है। प्रस्तुत अध्ययन में विशेष बच्चे से आशय उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत उन विद्यार्थियों से है जिन्हें विद्यालय/संबंधित अभिलेखों एवं अध्ययन में निर्धारित मानदंडों के आधार पर विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
- तार्किक योग्यता:- तार्किक योग्यता से आशय विद्यार्थी की उस मानसिक क्षमता से है जिसके माध्यम से वह दिए गए तथ्यों, सूचनाओं, संबंधों एवं परिस्थितियों का तार्किक विश्लेषण करके सही निष्कर्ष तक पहुँचता है। इसमें वर्गीकरण, क्रमबद्धता, समानता-असमानता, संबंध पहचानना, कारण-परिणाम, संख्या एवं आकृति संबंधी तर्क तथा समस्या समाधान जैसी क्षमताएँ सम्मिलित होती हैं। प्रस्तुत अध्ययन में तार्किक योग्यता से आशय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं विशेष बच्चों द्वारा तार्किक योग्यता मापने के लिए प्रयुक्त मानकीकृत परीक्षण पर प्राप्त अंकों से है। परीक्षण में प्राप्त अधिक अंक उच्च तार्किक योग्यता तथा कम अंक निम्न तार्किक योग्यता को प्रदर्शित करेंगे।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

- 1- उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं विशेष छात्रों की तार्किक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन।
- 2- उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं विशेष छात्राओं की तार्किक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ

- 1- उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं विशेष छात्रों की तार्किक योग्यता में सार्थक अन्तर नहीं है।
- 2- उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं विशेष छात्राओं की तार्किक योग्यता में सार्थक अन्तर नहीं है।

आंकड़ा संग्रहण के उपकरण

प्रस्तुत शोध हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

न्यादर्श

वर्तमान शोधपत्र हेतु 500 विद्यार्थियों (250 सामान्य एवं 250 विशेष विद्यार्थी)को शामिल किया गया है।

उपकरण

तार्किक योग्यता परीक्षण - के0 बायति द्वारा निर्मित प्रश्नावली।

परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या

उद्देश्य क्रमांक 1:- उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं विशेष छात्रों की तार्किक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना क्रमांक 1:- उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं विशेष छात्रों की तार्किक योग्यता में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या - 1

उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं विशेष छात्रों की तार्किक योग्यता की स्थिति

छात्र	N	Mean	SD	T-Value	सार्थकता स्तर
सामान्य	130	65-16	6-27	0-67	No Significance
विशेष	130	64-64	6-26		

व्याख्या:- तालिका संख्या 1 में उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य छात्रों की तार्किक योग्यता का मध्यमान, मानक विचलन 65.16 एवं 6.27 प्राप्त हुआ है जबकि विशेष छात्रों की तार्किक योग्यता का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 64.64 एवं 6.26 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 0.67 प्राप्त हुआ है। जिससे पता चलता है कि जब इन छात्रों को उपयुक्त शिक्षण संसाधन और सहयोगी वातावरण मिलता है, तो वे भी तार्किक सोच विकसित कर सकते हैं।

उद्देश्य क्रमांक 2:- उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं विशेष छात्राओं की तार्किक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना क्रमांक 2:- उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं विशेष छात्राओं की तार्किक योग्यता में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या - 2

उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं विशेष छात्राओं की तार्किक योग्यता की स्थिति

Nk=k,sa	N	Mean	SD	T-Value	lkFkZdrk Lrj
lkekU;	120	66-00	5-56	1-95	No Significance
fo~ks'k	120	64-59	5-79		

व्याख्या:- तालिका संख्या 2 में उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य छात्राओं की तार्किक योग्यता का मध्यमान, मानक विचलन 66.00 एवं 5.56 प्राप्त हुआ है जबकि विशेष छात्राओं की तार्किक योग्यता का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 64.59 एवं 5.79 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 1.95 प्राप्त हुआ है। जिससे पता चलता है कि सामान्य छात्राएँ आमतौर पर औपचारिक शिक्षा प्रणाली में सहजता से आगे बढ़ती हैं, जहाँ तार्किक चिंतन और समस्या समाधान कौशल को नियमित अभ्यास और विभिन्न शिक्षण तकनीकों के माध्यम से विकसित किया जाता है। दूसरी ओर, विशेष छात्राएँ (जैसे कि दिव्यांगता, सीखने में कठिनाई, या अन्य विशेष शैक्षणिक आवश्यकताओं वाली छात्राएँ) तार्किक योग्यता के विकास में भिन्न चुनौतियों का सामना कर सकती हैं।

निष्कर्ष

- उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं विशेष छात्रों की तार्किक योग्यता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
- उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं विशेष छात्राओं की तार्किक योग्यता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- ग्नाम्ब्स, टी., एवं नुसर, एल. (2019). विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों में तार्किक योग्यता का अनुदैर्घ्य मापन, फ्रंटियर्स इन साइकोलॉजी, 10, 232.
- गैरोते, ए., फेल्डर, एफ., क्रेहनमैन, ए., श्रैपेल, एस., सेर्मियर-डेसमोंटे, जी., एवं मोसर-ओपिट्ज, ई. (2020). समावेशी कक्षाओं में सामाजिक स्वीकृतिरू समावेशन के प्रति शिक्षक के दृष्टिकोण और कक्षा-प्रबंधन की भूमिका, फ्रंटियर्स इन एजुकेशन, 5.
- श्वाब, एस., लेहोफर, एम., एवं तांजर, एम. (2021). विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों के प्रति सामाजिक व्यवहार और सहपाठियों के दृष्टिकोण का विद्यार्थियों की पारस्परिक अंतःक्रिया पर प्रभाव, फ्रंटियर्स इन एजुकेशन।
- मॉरर, जे., बेकर, जे., हिल्केनमायर, एफ., एवं डासेकिंग, एम. (2021). विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों के शिक्षकों के दूरस्थ अधिगम के अनुभव और आत्म-प्रभावकारिता, फ्रंटियर्स इन एजुकेशन।
- यांग, एल., फंग सिन, एफ., एवं सैविकास, एम. एल. (2023). विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों में करियर अनुकूलनशीलता के मापन की संरचना और विश्वसनीयता, फ्रंटियर्स इन साइकोलॉजी।
- बीमिश, डब्ल्यू., हे, एम., एवं युएन, एस. (2024). एशिया-प्रशांत क्षेत्र में विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों के लिए समावेशन को आगे बढ़ाना, फ्रंटियर्स इन एजुकेशन।
- चेन, एच. (2024). मध्य विद्यालय के शिक्षकों के कल्याण पर विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों के अनुपात का प्रभाव, फ्रंटियर्स इन एजुकेशन।
- भारत सरकार (2016). दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार।
- शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारत सरकार।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (2021). समावेशी शिक्षा के लिए दिशानिर्देश एवं संसाधन सामग्री, एनसीईआरटी, नई दिल्ली।

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.